सचित्र बाल कथाएँ

संतोष का फल

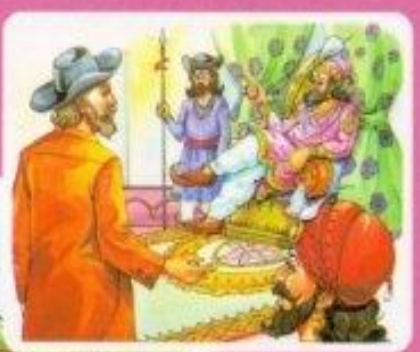

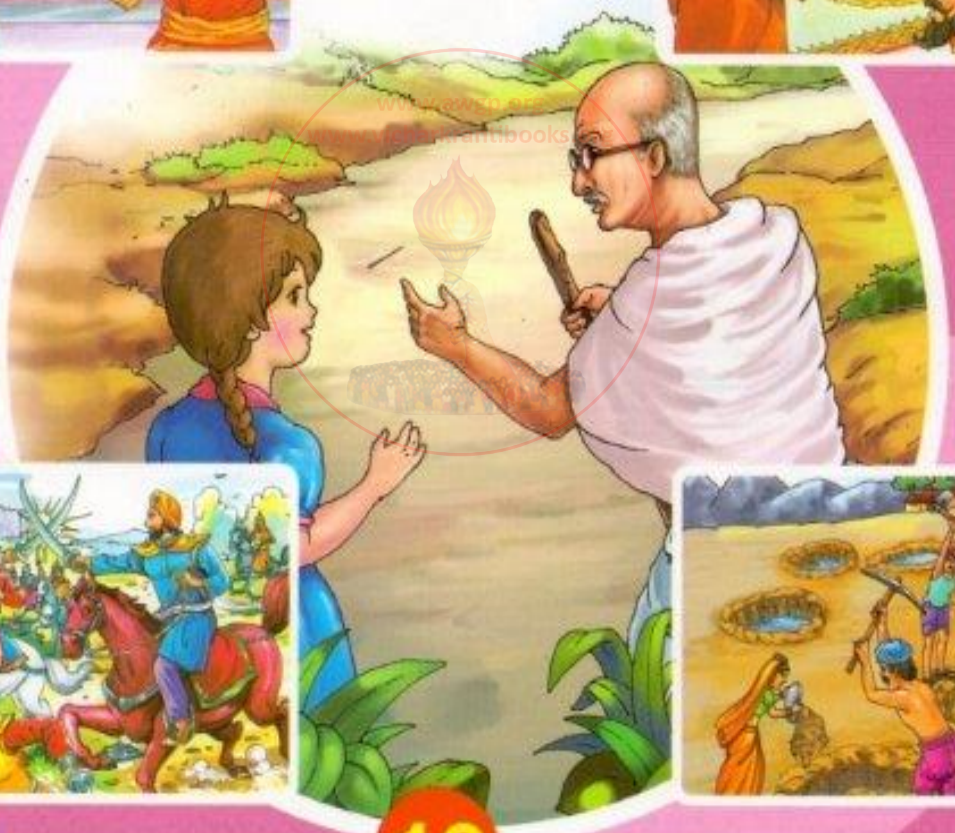

19

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

माँ की शिक्षा

गांधी जी जब छोटे थे तो उनके बड़े भाई ने उन्हें जोर से मार दिया। वे रोते हुए माँ के पास शिकायत करने गए। माँ ने कहा—''तू भी उसे मार।'' गांधी जी माँ पर बिगड़े और कहा—''जो गलती करता है, उसे तो आप रोकती नहीं। उलटे मुझे भी वही गलती करना सिखाती हैं।''

माँ ने कहा—''बेटा! मैं तो तेरी परीक्षा ले रही थी। आज परिवार के सदस्यों के प्रति तेरी यह भावना बने। कल जब तू बड़ा हो तो विश्व-परिवार के लिए भी तेरी यही भावना विकसित हो। जो भी गलती करे, उसे रोकने का भाव जगे। तभी तो विश्व में सुख-शांति रह सकेगी।'' ऐसी शिक्षा की पहली पाठशाला परिवार ही है, जहाँ माँ प्रथम गुरु के रूप में बालक को शिक्षा देती है। माँ की इन प्रारंभ की शिक्षाओं से ही बापू महान बने एवं विश्ववंद्य बापू कहलाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निन्यानवे का फेर

एक सेठ की बड़ी सी कोठी थी। उसी के पड़ोस में एक मजदूर छोटे से घर में रहता था। मजदूर की पत्नी और मजदूर मेहनत से सारे दिन काम करते। शाम को दोनों प्रेमपूर्वक भोजन करते और सुख की नींद सो जाते। सेठ की पत्नी छत पर से उन्हें देखती रहती। एक दिन सेठानी ने अपने पति से कहा कि पड़ोसी मजदूर इतना चैन से भोजन करते और सुख की नींद सोते हैं। पर हम लोग घटिया खाते और दिनभर धन की रखवाली में चिंतित रहते हैं। हम से तो यह मजदूर ही अच्छे हैं। सेठ ने कहा—"मजदूर ९९ के फेर में नहीं पड़ा है।"

सेठानी ने पूछा, "९९ का फेर क्या होता है ?"

सेठ ने रात को एक पोटली में ९९ रुपये बाँधकर चुपके से मजदूर के आँगन में फेंक

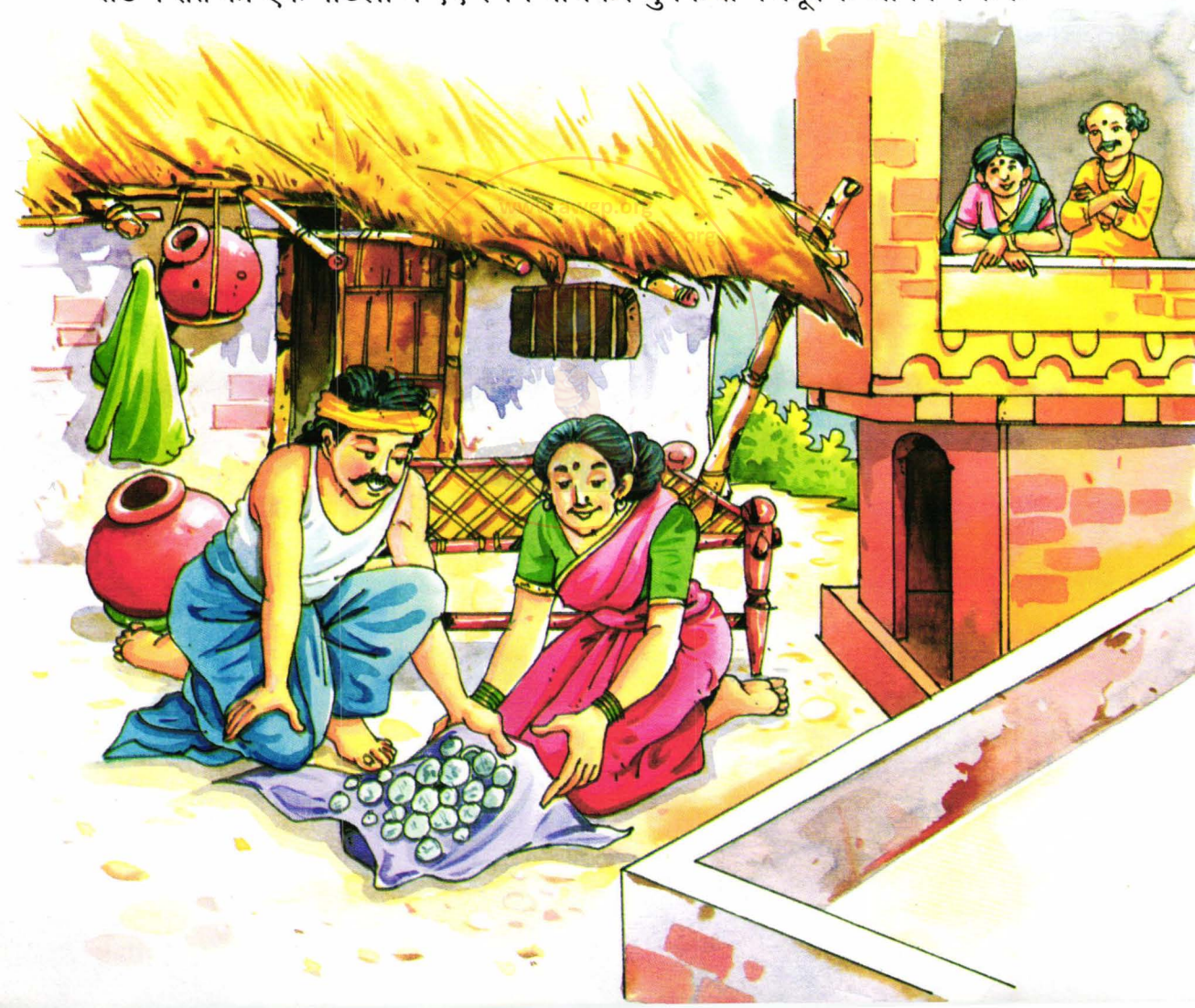

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिए। प्रातः मजदूर उठा। उसने रुपयों की पोटली पड़ी देखी तो प्रसन्न हुआ और रुपये गिने। वे ९९ निकले। उसने पत्नी से कहा—"खाने में कुछ बचत करके १ रुपया पूरा कर लें तो १०० रुपये हो जाएँ।" बात तय हो गई। इस दिन की मजदूरी में से आधे पेट भोजन किया, आधी बचाई गई।

सेठानी ने छत पर से देखा कि ९९ के फेर में पड़ने के पहले दिन ही भोजन घटिया हो गया। दो-चार दिन में एक रुपया पूरा हो गया। पर लोभ बढ़ जाने से उन्होंने उस पूँजी को बढ़ाने का निश्चय किया। वे बहुत गरीबी से रहने लगे। दिन-रात अधिक कमाने की चिंता में डूबे रहने लगे। रात को उन्हें चिंता में नींद भी नहीं आती थी, बेचैन रहते थे।

सेठजी ने सेठानी को बताया कि यही ९९ का फेर है। धन अधिक बढ़ाने और उसकी रखवाली करने के लोभ में मनुष्य अपनी सारी सुख-शांति खो बैठता है।

हमें जितनी जरूरत हो, उतना धन मिल जाने पर ही संतोष करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्राह्मण की मूर्खता

एक पीपल के वृक्ष की जड़ में एक देवसर्प रहता था। एक ब्राह्मण ने उसे पहचान लिया सो रोज एक कटोरा दूध बाँबी पर रखकर उसकी पूजा करने लगा।

सर्पदेव प्रसन्न हुए। वे नित्य दूध पी जाते और बदले में एक स्वर्ण मुद्रा उसी कटोरे में रख जाते। ब्राह्मण का धन भी बढ़ने लगा और लालच भी।

ब्राह्मण ने सोचा, सर्प की बाँबी में स्वर्ण मुद्राओं का भंडार होगा, सो उसे मारकर एक ही दिन में क्यों न वह सारी राशि प्राप्त कर ली जाए। उसने घात लगाकर सर्प को मार डाला।

खोदने पर बाँबी में कुछ भी न निकला। अति लालच से होने वाली हानि का अनुभव करके ब्राह्मण सिर धुनकर पछताता रहा। जल्दी ही महान बनने की इच्छा रखने वाले भी इसी तरह हँसी के पात्र बनते और घाटे में रहते हैं।

एक दिन में महान बनने की कल्पना करना मूर्खता ही है।

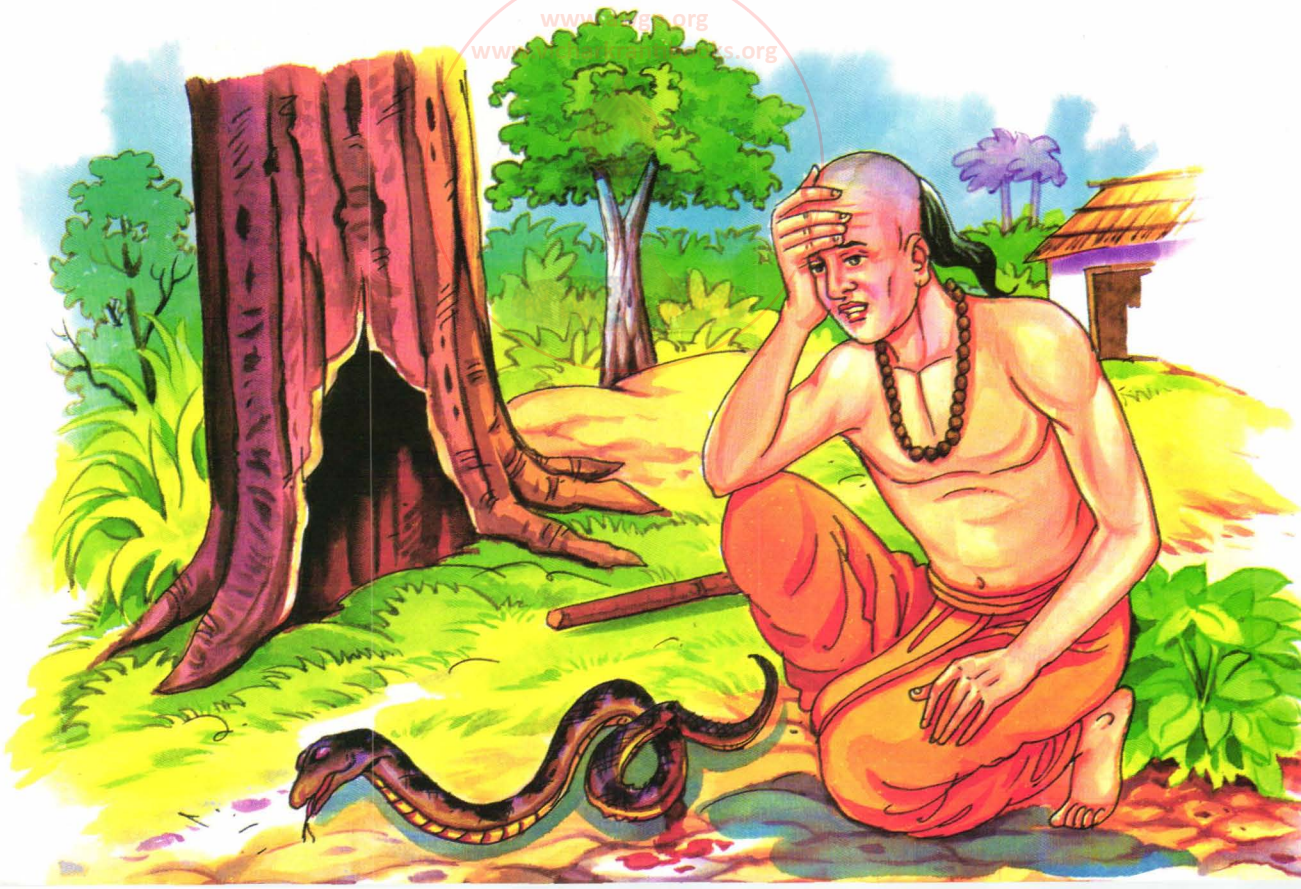

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कस्तूरीबाई

गुजरात में भावनगर नाम का एक शहर है। वहाँ खेडियार माता के मंदिर में चंडी-पाठ की पूर्णाहुति हुई। उसमें एक बकरे की बलि दी जाने लगी। यह दृश्य एक ब्राह्मण बालिका कस्तूरीबाई देख रही थी। बकरे की चीखें सुनकर उनका हृदय रो उठा। वह तेजी से दौड़कर चंडी के सामने खड़ी हो गईं। बोली—"यदि मांस ही चढ़ाना है तो बकरे की जगह ब्राह्मणी का चढ़ेगा।"

लोगों ने बहुत डराया, धमकाया पर बालिका टस से मस न हुई । अंत में निराश होकर लोगों को बलि का विचार बदलना पड़ा।

महाराज को खबर पड़ी तो वे बालिका पर प्रसन्न हुए। उस समय से बलिप्रथा ही बंद करा दी गई।

ईश्वर किसी भी प्राणी की बलि से प्रसन्न नहीं होता। अपनी बुराइयों की बलि करें अर्थात उन्हें छोड़ें। अच्छे गुण को अपनाएँ। किसी भी देवी-देवता को प्रसन्न करने का यही रास्ता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'बा' का उलाहना

एक बार रात के समय साबरमती आश्रम में कुछ अतिथि आ गए, उनमें मोतीलाल नेहरू (पं० जवाहरलाल नेहरू जी के पिता) भी थे। भोजन था नहीं। बनाने की आवश्यकता पड़ी। 'बा' उसी समय थककर लेटी थीं। उनको नींद आ गई। आश्रम में एक ट्रावनकोर का लड़का और एक कुसुम नाम की लड़की रसोई में 'बा' की भोजन बनाने में सहायता किया करते थे। उन्हीं से गांधी जी ने कहा "कुछ खाना बना लो।" खाने का प्रबंध हो गया। 'बा' जब उठीं तो बोलीं—"मुझे क्यों नहीं जगाया, इन बच्चों को भी तो आराम की आवश्यकता थी?"

'बा' और बापू को दूसरों के दु:ख का सदैव ध्यान रहता था। ऐसी सेवा के प्रति निष्ठा ने ही उन्हें विश्ववंद्य बना दिया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंगरेज डाक्टर का देश-प्रेम

एक बादशाह था शाहजहाँ। वह भारत में शासन करता था। एक दिन बादशाह की लड़की बीमार पड़ी। संयोग से उन दिनों व्यापारियों के साथ ब्रिटेन से एक डाक्टर भी आया हुआ था। उसे बादशाह की लड़की के इलाज लिए बुलाया गया। डाक्टर ने उसका भली प्रकार इलाज कर दिया और वह चंगी हो गई।

इस पर प्रसन्न होकर बादशाह ने उस डाक्टर से इच्छानुसार धन माँगने के लिए कहा। डाक्टर देशप्रेमी था। उसने अपने लिए कुछ भी नहीं माँगा। वह अपने देश का अधिक से अधिक भला करना चाहता था। उसने कहा—"जहाँपनाह मेरे देश से होने वाले व्यापार पर से आप चुंगी हटा दें।"

शर्त पूरी की गई तो अंगरेजों ने अपने यहाँ से वस्तुएँ लाकर काफी मुनाफे पर भारत में बेचना शुरू किया। उस डाक्टर की ही देन थी कि अंगरेज भारत में आए। उन्होंने हमारे देश में व्यापार किया और यहाँ बस गए। वे एक दिन यहाँ के शासक बन बैठे।

अपने देश और समाज के लिए उस डाक्टर का त्याग सभी देशवासियों के लिए एक महान आदर्श की प्रेरणा देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शूद्र और ब्राह्मण

महात्मा रामानुज बहुत बड़े दार्शनिक थे। जब वे बुड्ढे हो गए तो शरीर भी दुर्बल हो गया। इस कारण वे नदी में स्नान करने जाते समय लोगों का सहारा लेकर जाया करते थे। जाते समय वे ब्राह्मण के कंधे का सहारा लेते। आते समय शूद्र के कंधे पर हाथ रखकर आते।

लोगों ने आश्चर्यपूर्वक पूछा—"भगवन्! शूद्र के स्पर्श से तो आप अपवित्र हो जाते हैं, फिर स्नान का महत्त्व क्या रहा?"

आचार्य जी मुस्कराए। उन्होंने कहा—"स्नान से मनुष्य की देह मात्र शुद्ध होती है। मन का मैल तो अहंकार है। जब तक मनुष्य में अहंकार शेष है, तब तक उसे मन का मलिन ही कहा जाता है। मैं शूद्र का स्पर्श करके अपने मन की मलिनता को स्वच्छ करता हूँ। मैं किसी से बड़ा नहीं, सब मुझ से ही बड़े हैं। शूद्र भी मुझ से श्रेष्ठ है। इसी भावना को निरंतर बनाए रखने के लिए मैं शूद्र का सहारा लेता हूँ।"

उनका उत्तर सुनकर पूछने वालों का मन श्रद्धा से भर उठा। उन्होंने रामानुज आचार्य जी को प्रणाम किया। उनकी समझ में यह बात भी आ गई कि वर्ण और जाति के आधार पर मनुष्य में भेद नहीं करना चाहिए। सभी का सम्मान करना चाहिए।

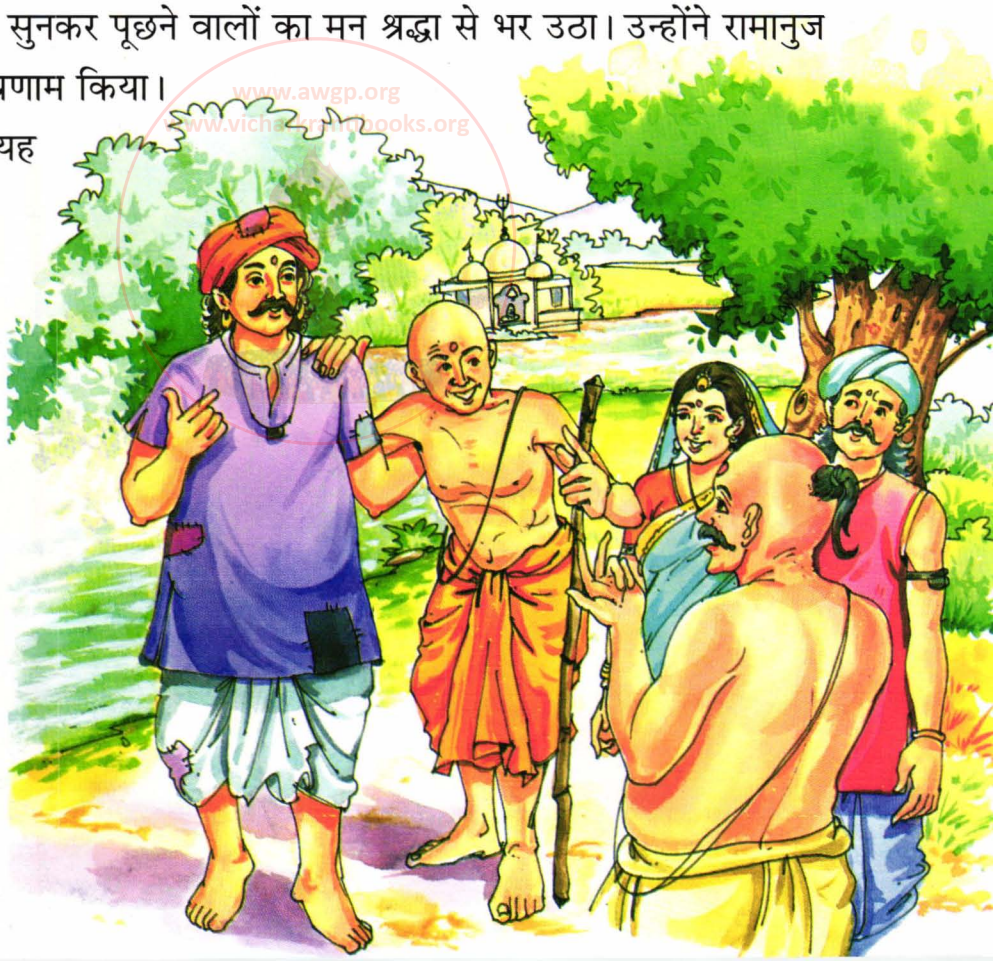

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा की भूख

स्वामी विवेकानंद उन दिनों अमेरिका प्रवास में थे। वे अपना भोजन अधिकतर स्वयं ही पकाते थे। एक दिन उन्होंने अपना भोजन बनाकर तैयार किया। इतने में ही कुछ भूखे बालक उधर आ निकले। स्वामी जी ने सारा भोजन उन बालकों को बाँट दिया। इससे इन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई।

पास ही एक अमेरिकन महिला खड़ी थी। उसने पूछा—"स्वामी जी! आपने बिना कुछ खाए ही सारा भोजन इन बालकों में क्यों बाँट दिया?"

वे बोले—"माता जी, पेट की भूख से बड़ी होती है आत्मा की भूख। मैंने अपनी आत्मसंतुष्टि के लिए ही भोजन बच्चों में बाँट दिया। ये छोटे बालक मेरे सामने भूखे खड़े रहते और मैं खाना खाता, तो मेरा मन छटपटाता। इन्हें खाना खिलाकर मुझे बहुत शांति मिली। मन तृप्त होने पर पेट की भूख भी न रही।"

स्वामी जी की बात सुनकर विदेशी महिला ने श्रद्धापूर्वक उनके आगे सिर झुका दिया।

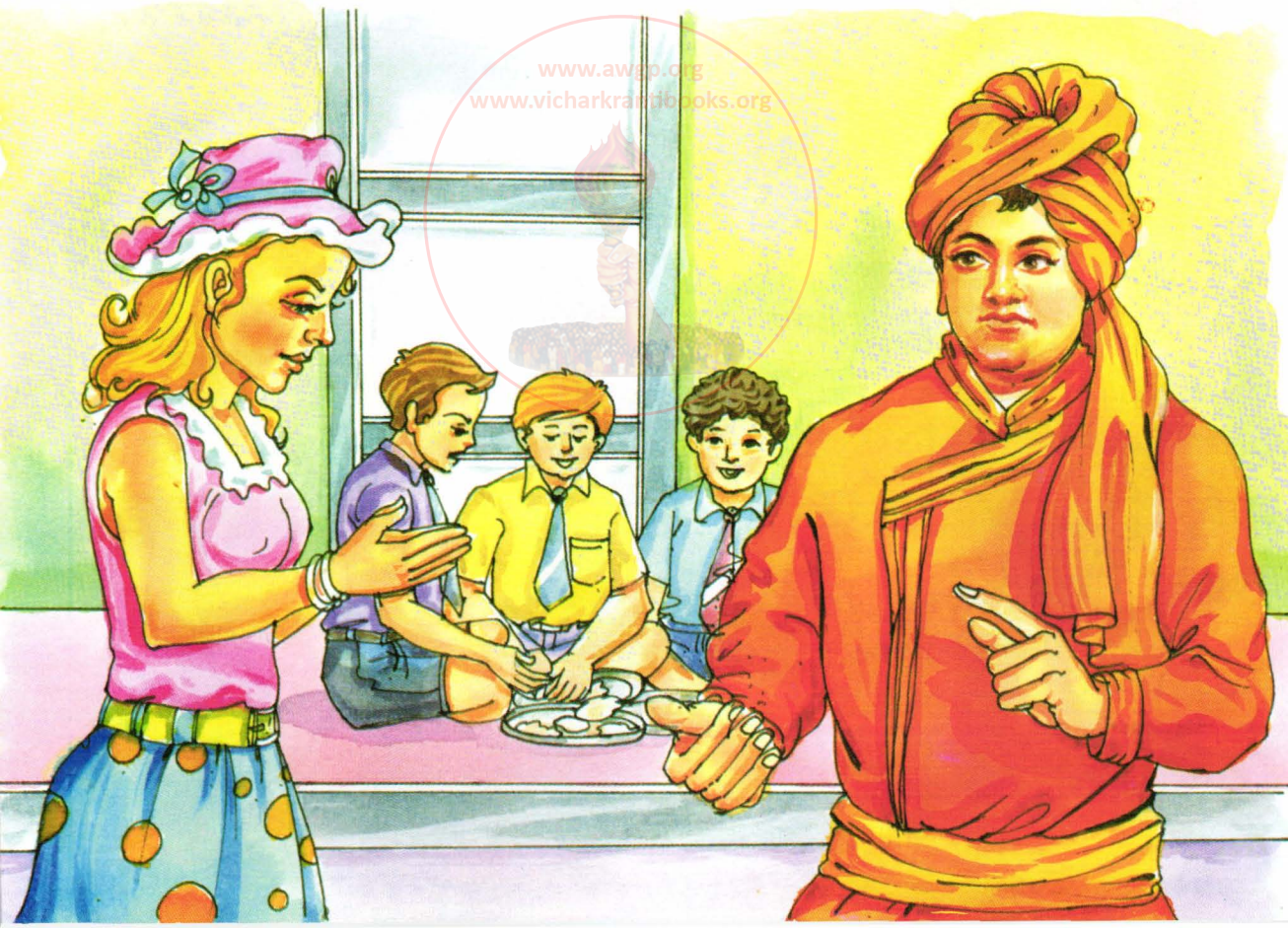

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमार्थ में घर जलाया

जापान के एक गाँव में मेला लगा हुआ था। नर-नारियों की भारी भीड़ उसे देखने जमा थी। एक वृद्ध हागामूची ने देखा कि समुद्र बहुत पीछे हट गया है। इतना तो भाटे के दिनों में भी नहीं हटता था। इस आश्चर्य का कारण उसकी समझ में आया। जब वह बच्चा था, तब भी इसी प्रकार एक बार समुद्र हटा था और उसके तुरंत बाद इतने जोर का उछाल आया था कि तटवर्ती गाँव उसमें बह गए थे। इस विपत्ति की सूचना वह मेले वालों को कैसे दे ? इसका उपाय उसे एक ही सूझा। टीले पर बने हुए अपने घर में आग लगा दी। उसे बुझाने के लिए भीड़ टीले पर पहुँची। इतने में ही बाढ़ आ गई। लोग टीले पर खड़े थे, इसलिए बच गए।

हागामूची की परमार्थपरायणता पर सभी लोग बड़े कृतज्ञ हुए। थोड़े दिन बाद उसके मर जाने पर लोगों ने उसका स्मारक बनाया, जो अभी तक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी जी का उत्तर

महापुरुषों के जीवन प्रकाश स्तंभ की तरह होते हैं। उनको देखकर कोई भी व्यक्ति प्रेरणा और प्रकाश पा सकता है। उनकी सरलता और सहजता जीवन जीने का सही शिक्षण देती है।

एक बार एक पत्रकार गांधी जी से मिलने गया। उसे मालूम था कि गांधी जी शीशे की मदद के बिना भी शेव बना सकते थे, गांधी जी से उसने पूछा—"बापू, आप शीशे में मुँह क्यों नहीं देखते ?" गांधी जी ने जवाब दिया—"मुझसे मिलने वाला हर व्यक्ति मेरा मुँह देखता ही है, तो फिर मुझे खुद अपना मुँह देखने की क्या आवश्यकता है।"

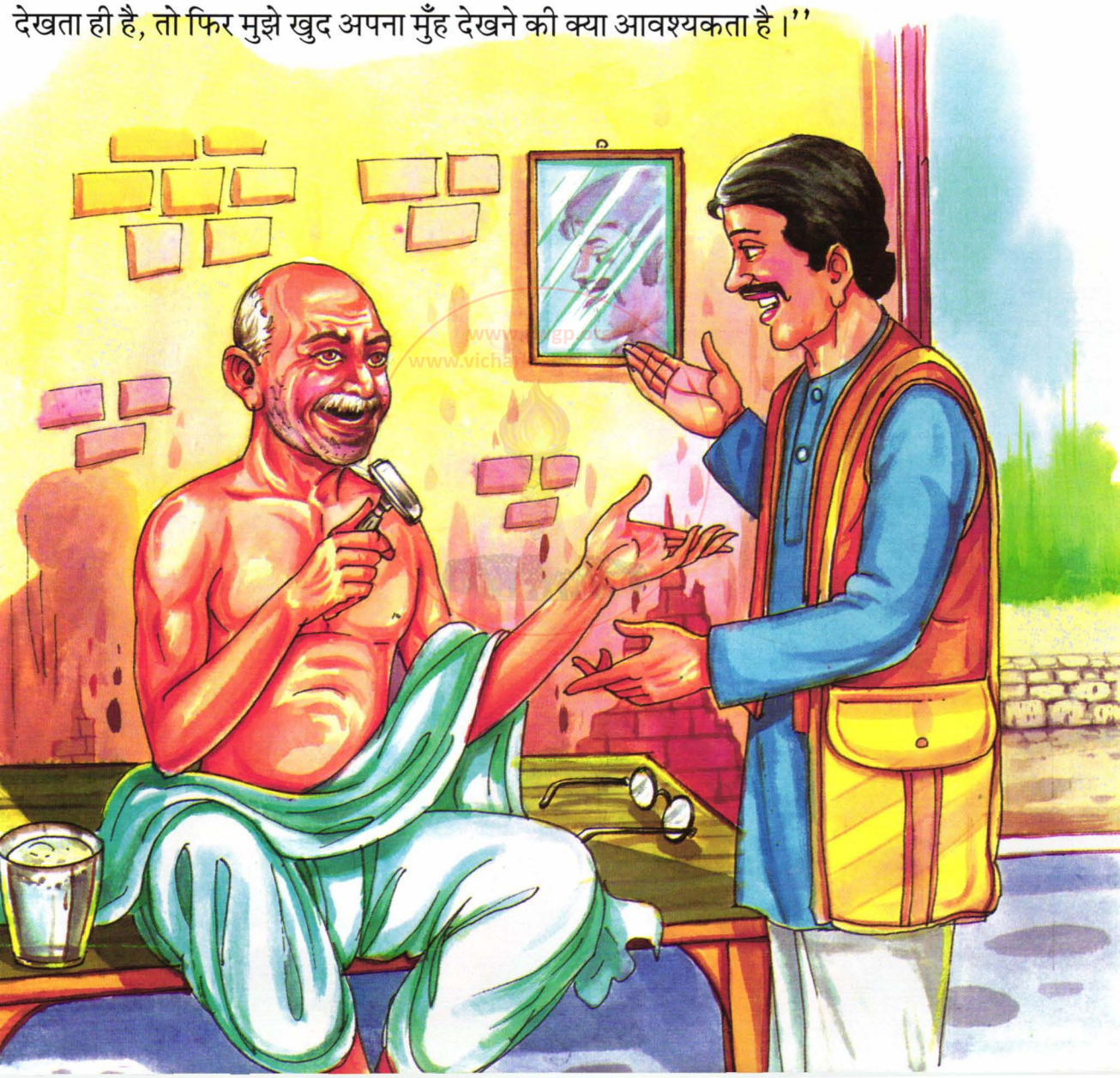

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मकड़ी से सीख मिली

एक बार एक मकड़ी लंबा जाला तान रही थी। पूरा जाला बन नहीं रहा था। बार-बार टूट जाता था। फिर भी वह निराश नहीं हुई। प्रयास जारी रखा और चौदहवें प्रयास में सफल हुई। यह दृश्य युद्ध में हारा हुआ ब्रूसो देख रहा था। उसकी तेरह बार लड़ाई में हार हुई थी। मकड़ी के साहस से प्रभावित होकर उसने चौदहवीं बार लड़ाई की तैयारी की और दूने उत्साह से लड़ा तथा सफलता प्राप्त की।

ब्रूसो कहते रहते थे कि हर असफलता बताती है कि पूरी तत्परतापूर्वक कार्य नहीं हुआ। जो भूलों को समझते हैं और सुधारते हैं, वे असंभव को भी संभव कर दिखाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गांधी जी और किसान

गांधी जी की उन दिनों बिहार में ख्याति थी। वे जिस गाड़ी से बेतिया जा रहे थे, उसी में एक किसान भी चढ़ा। उसे गांधी जी के दर्शनों की इच्छा थी। थर्ड क्लास के सीट पर पैर फैलाए हुए एक व्यक्ति को किसान ने देखा, तो पैर मरोड़कर एक कोने में ठूँस दिया और बोला—"ऐसे पैर फैलाकर बैठा है मानों बाप की गाड़ी हो।" गाड़ी बेतिया पहुँची। डिब्बे में से निकलते ही अपार जनसमूह प्लेटफॉर्म पर खड़ा दिखाई दिया। जय-जयकार होने लगी और गांधी जी को फूलों से लाद दिया गया।

किसान हड़बड़ा गया। जिसके पैर मरोड़कर कोने में ठूँसे थे, वही गांधी जी निकले। अनजानेपन पर उसे पश्चात्ताप हो रहा था। भीड़ हटते ही उसने क्षमा मांगी। गांधी जी ने कहा—"गलती तो मेरी थी, जो अधिकार से अधिक जगह घेरी। तुम क्यों दुखी होते हो ?"

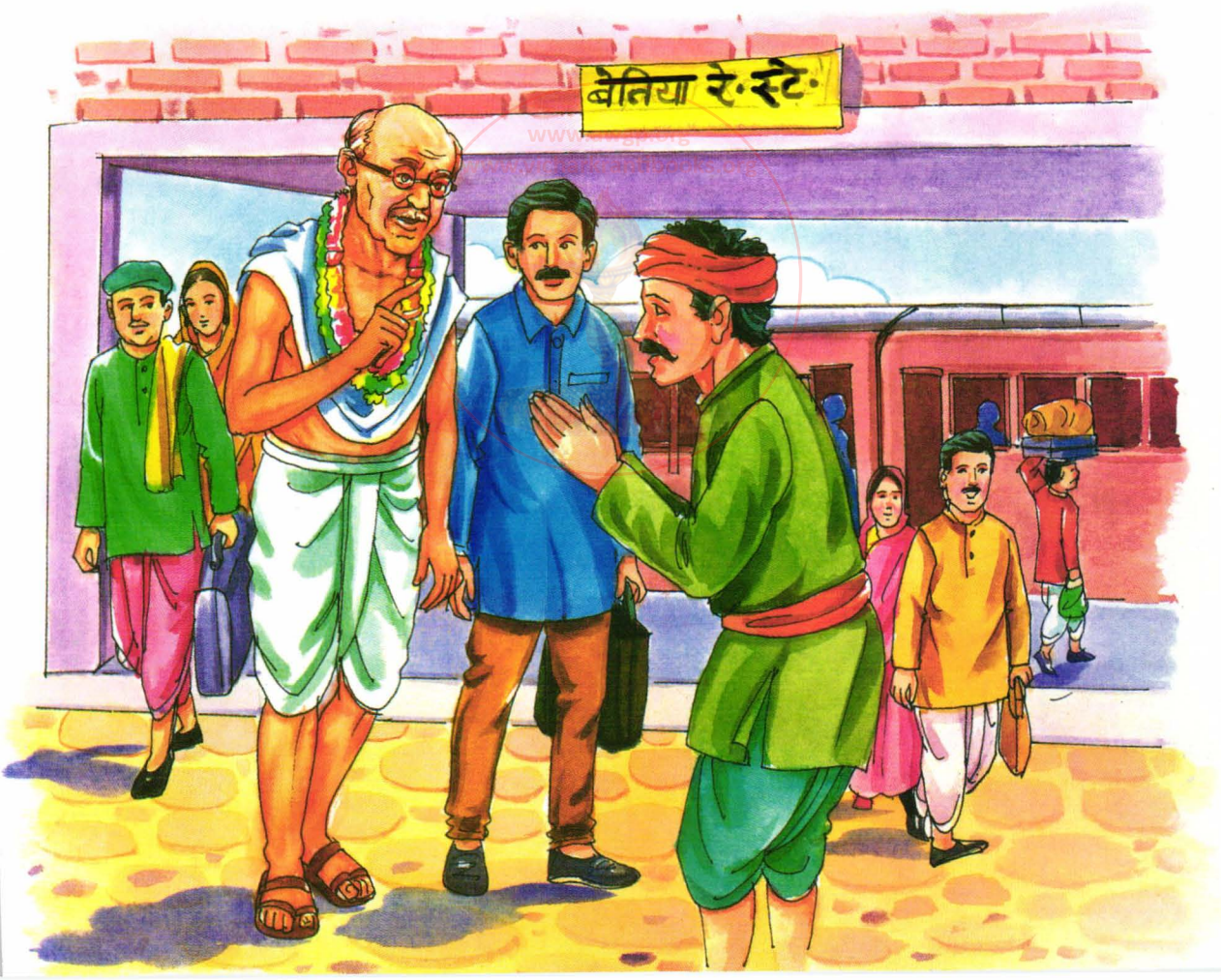

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुमूल्य शरीर

एक संत के पास एक व्यक्ति दुखी होकर आया—"मैं अभागा हूँ। मेरे पास कुछ भी नहीं है। ऐसा जीवन जीने से तो अच्छा है स्वयं को समाप्त कर लिया जाए।" संत ने कहा—"क्या तुम्हें अपने पास छिपी विभूतियों की जानकारी है ? यदि न हो तो मैं देता हूँ। तुम अपनी एक आँख, एक हाथ व एक पैर के बदले में क्या लेने को तैयार हो ? प्रत्येक के लिए मैं एक-एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दे सकता हूँ।" व्यक्ति बोला—"भगवन्! ये तो मैं दे नहीं सकता। इनके बिना मैं जीऊँगा कैसे ?" तब संत बोले—"रे मूर्ख! करोड़ों की संपदा तो अपने साथ लिए घूम रहा है और रो-रोकर यह कहता फिरता है कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

बहुसंख्य ऐसे ही हैं जो इस बहुमूल्य संपदा को न पहचानकर अभागी स्थिति में जीते हैं। आत्मबोध उन्हें तब होता है जब उन्हें कोई प्रज्ञा संपन्न मनीषी सीख देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुनिष्ठा

ऋषि धौम्य के आश्रम में कितने ही छात्र पढ़ते थे। वे उन्हें पूरी लगन से पढ़ाते, साथ ही देखते कि छात्रों में सद्‌गुणों की वृद्धि हुई या नहीं, इसकी परीक्षा भी लेते रहते थे।

एक दिन मूसलाधार वर्षा हो रही थी। गुरु ने अपने छात्र आरुणि से कहा—"बेटा! खेत में मेंड़ टूट जाने से पानी बाहर निकला जा रहा है। तुम जाकर मेंड़ बाँध आओ।" छात्र तत्काल उठ खड़ा हुआ और खेत की ओर चल दिया।

पानी का बहाव तेज था। छात्र से रुका नहीं। कोई उपाय न देख आरुणि उस स्थान पर स्वयं लेट गया। इस प्रकार पानी रोके रहने में उसे सफलता मिल गई।

बहुत रात बीत जाने पर भी जब छात्र न लौटा तो धौम्य को चिंता हुई और वे खेत पर उसे ढूँढ़ने पहुँचे। देखा तो छात्र पानी को रोके मेंड़ के पास पड़ा है। देखते ही गुरु की छाती भर आई। उनने उठाकर शिष्य को गले लगा लिया। सच्ची शिक्षा अक्षरज्ञान में नहीं सद्‌गुणों से पूर्ण श्रेष्ठ व्यक्तित्व में ही होती है।

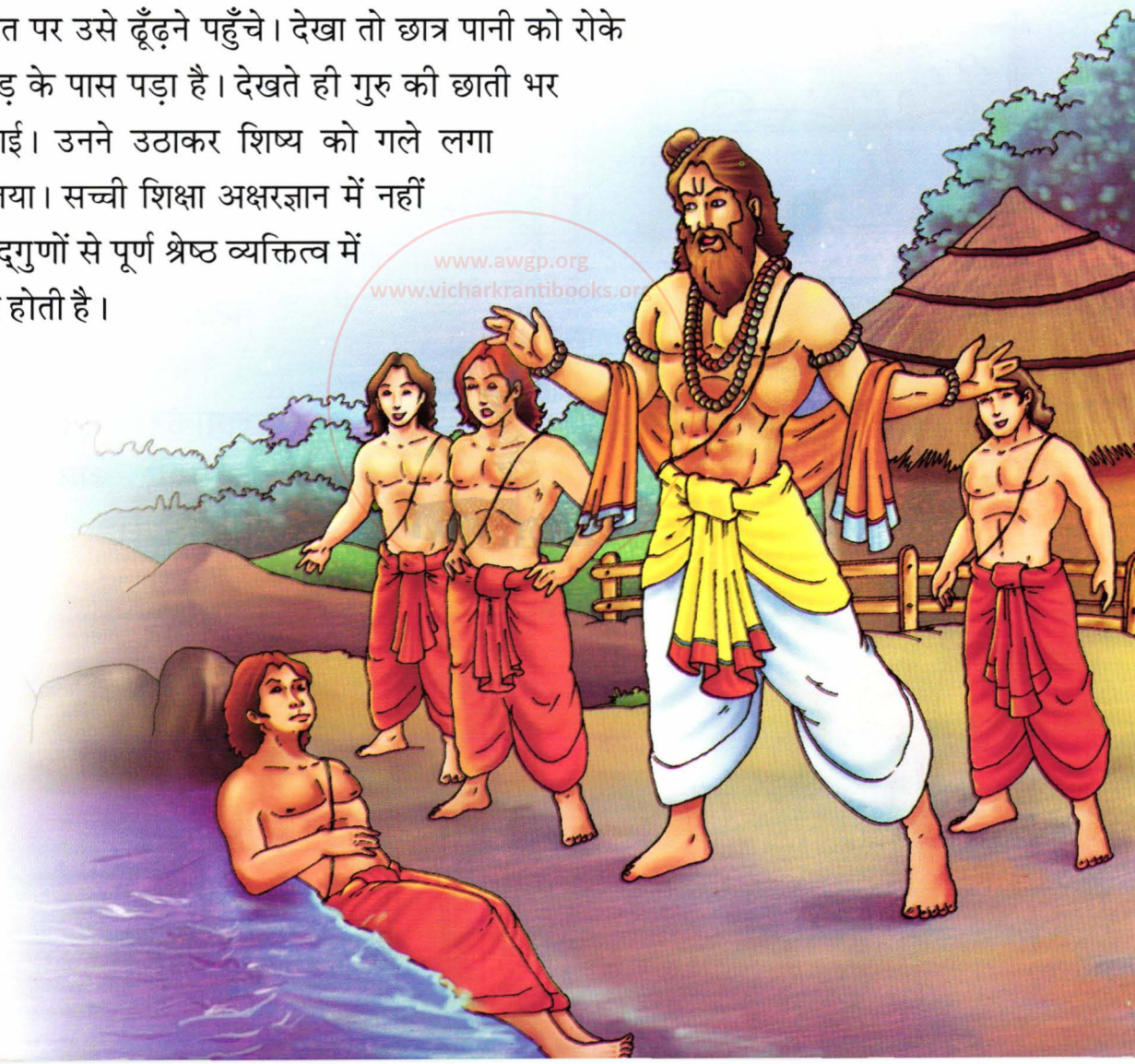

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो मित्र

दो मित्र एक साथ खेले और साथ-साथ बड़े हुए। पढ़ाई में भी दोनों आगे रहते थे। एक युवक धनवान धनी घर का था और उसे खरच करने की खुली छूट थी। दूसरा-निर्धन था पर संस्कारवान घर से आया था व सदैव सोच समझकर कम से कम खरच करता। धनी मित्र जब तक साथ रहा, उसे अपनी फजूलखरची में साथ रहने को आमंत्रित करता रहा। पर उसने उसकी यही बात न मानी। शेष बातों पर सदैव परामर्श लेता भी रहा और उसे सुझाव देता भी कि अधिक धन होते हुए भी तुम्हें बिना सोचे-समझे खरच नहीं करना चाहिए।

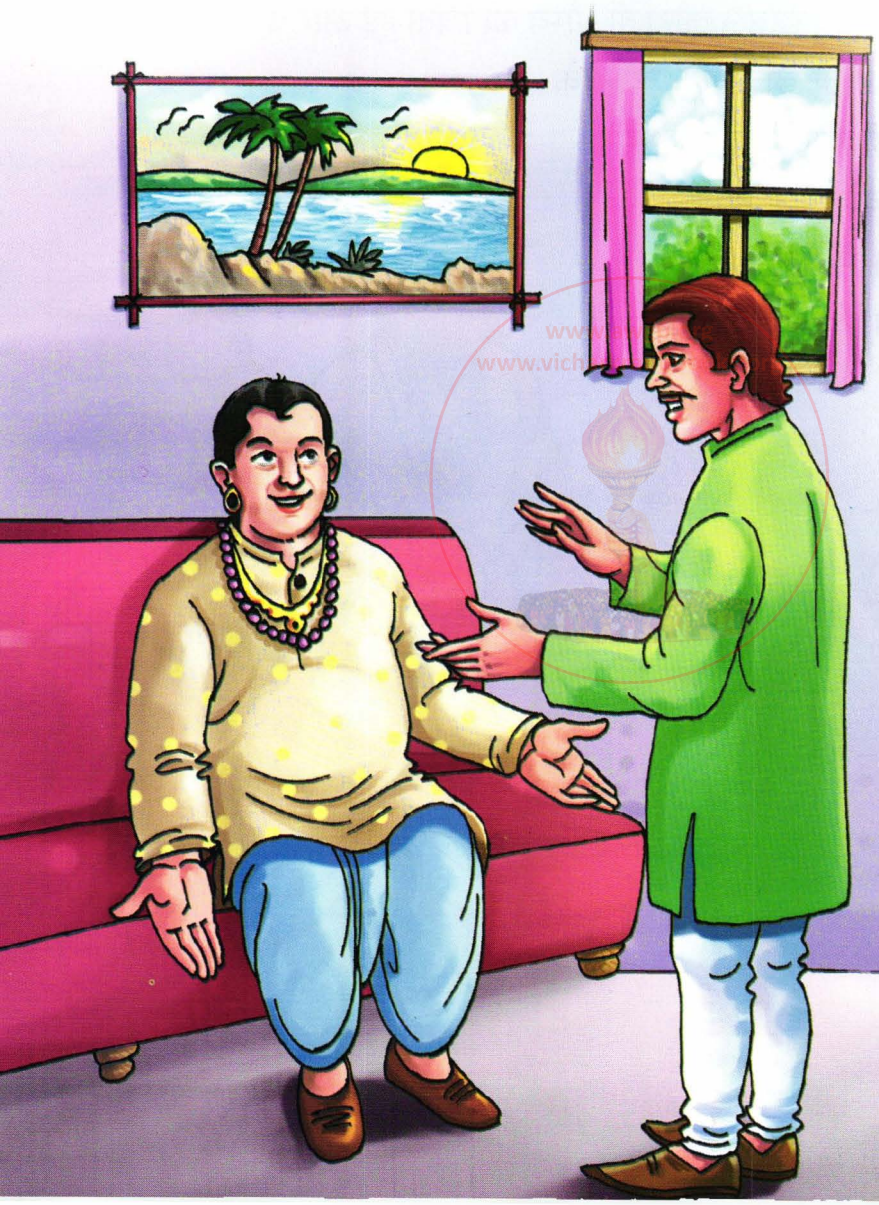

दोनों कुछ दिनों बाद में अलग-अलग हो गए। निर्धन मित्र ने अध्यापक की नौकरी स्वीकार करली व धनी मित्र ने व्यापार में धन लगाकर अपना कारोबार अलग बना लिया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१० वर्ष के बाद दोनों की सहसा मुलाकात एक औषधालय में हुई। धनी मित्र अपना धन तो चौपट कर ही चुका था, अन्य दुर्व्यसनों के कारण जिगर खराब होने से औषधालय में इलाज कराने के लिए भरती हुआ था। दूसरी ओर उसका मित्र अब एक विद्यालय का प्रधानाचार्य था। पति-पत्नी व एक बालक सीमित खरच में निर्वाह करते थे। प्रसन्न खुशी-खुशी जीवन जीते थे। दोनों ने एकदूसरे की कथा-गाथा सुनी। धनी मित्र की आँखों से आँसू लुढ़क पड़े—"मित्र! मैंने तुम्हारा कहा माना होता तो आज मेरी यह स्थिति न होती। अनावश्यक खरच की मेरी आदत ने आज मुझे यहाँ तक पहुँचा दिया।" दूसरे ने सहानुभूति दिखाई तथा जितनी हो सकी धन देकर सहायता व सहयोग देकर उसे नए सिरे से जीवन जीने योग्य बना दिया। अच्छे मित्र की सलाह अवश्य माननी चाहिए।

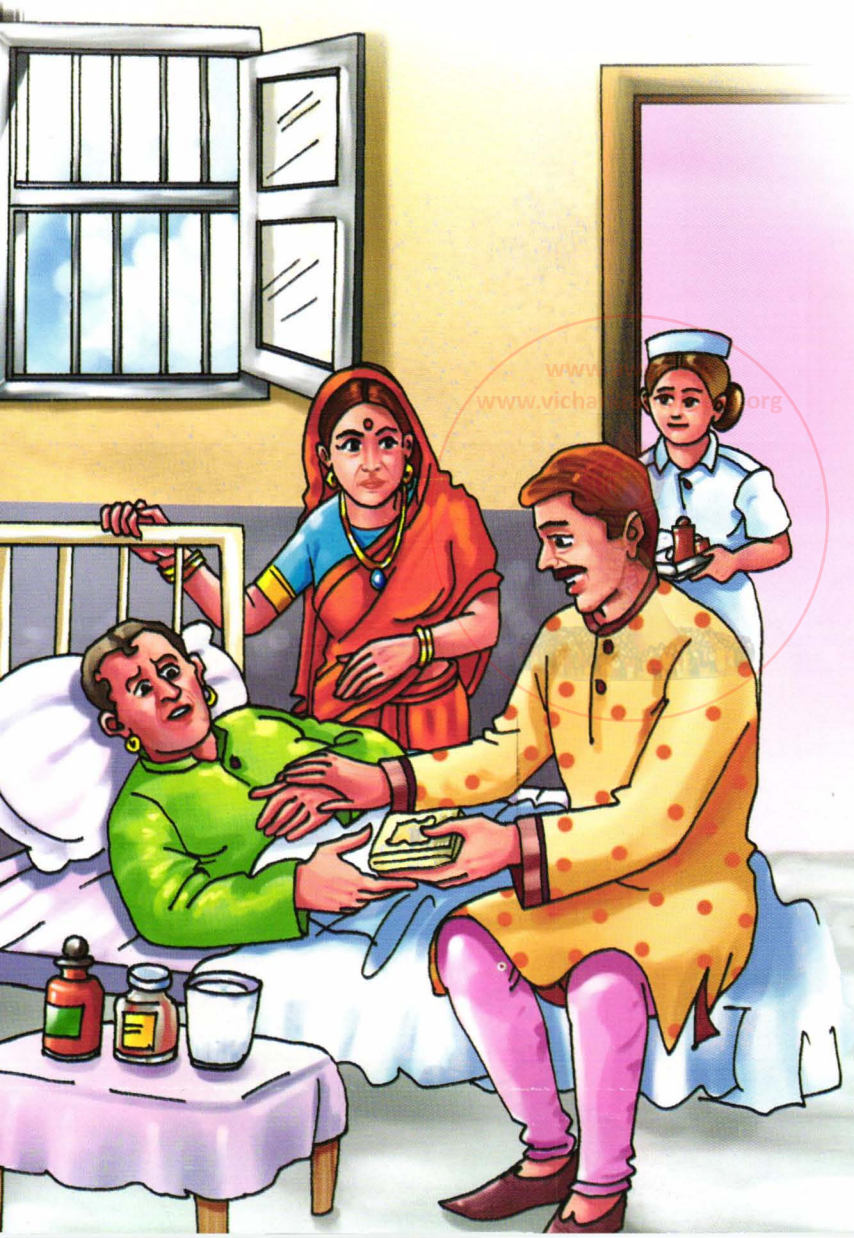

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बापू की वेदना

बापू के पैरों में बिवाई फट गई थीं। 'बा' गरम पानी से उनको धो रही थीं। पानी बेकार न जाने पाए इसलिए बापू की हिदायत के अनुसार वे उसे इधर-उधर नहीं, पौधों में ही डालती थीं।

उस दिन पानी 'बा' ने गुलाब के पौधों में डाला। बापू बहुत देर तक गुलाबों को नाराजी की दृष्टि से देखते रहे। 'बा' ने कारण पूछा, तो बापू ने कहा—"सुंदर होते हुए भी ये फूल मुझे काँटों जैसे बुरे लगते हैं। इनके स्थान पर यदि शाक-सब्जी उगाए होते, तो उनसे हममें से किसी का पेट तो पलता। श्रम का कुछ सार्थक परिणाम तो हाथ लगता।"

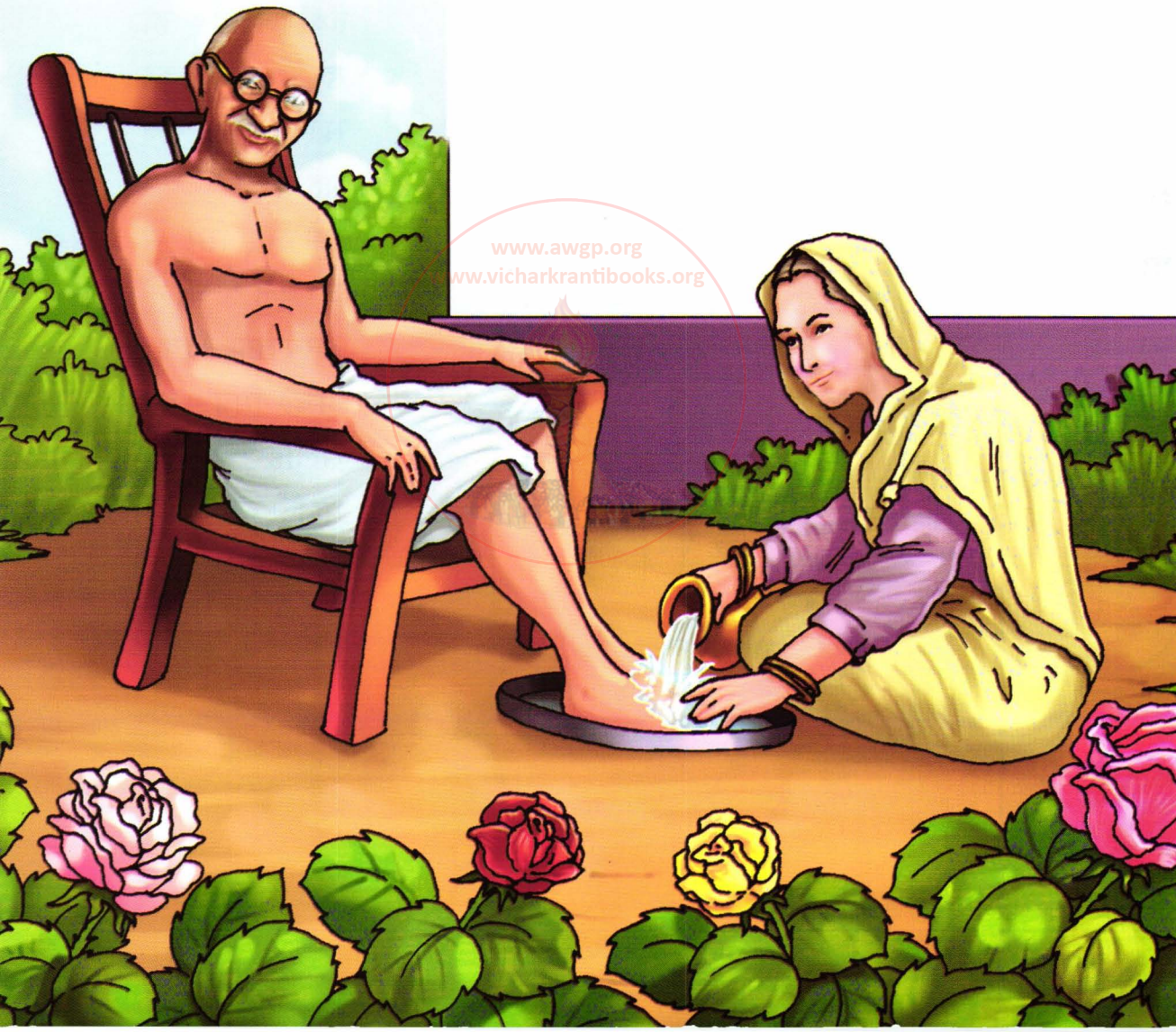

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्त्तव्यपरायण तोता

एक जमींदार के पास बहुत जमीन थी। उसमें उसने धान बोया। रखवाली के लिए उसने चार कोनों पर रखवाले नियुक्त कर दिए। रखवाले होने पर भी तोते आ जाते और पेट भरकर भाग जाते। पर एक तोता ऐसा था, जो खाने के बाद कई बालें चोंच में दबाकर साथ ले जाता। चौकीदारों ने उस तोते को पकड़कर मालिक के पास ले जाने का निश्चय किया। वह सुंदर भी बहुत था। जाल फैलाया, सो वह उसमें फँस गया। पकड़कर मालिक के पास पहुँचाया।

जमींदार ने तोते से पूछा—"बालें कहाँ ले जाते हो ?"

उसने कहा—"दो कर्ज चुकाने के लिए, दो कर्ज देने के लिए और दो परमार्थ के लिए। कुल छह बालें पेट भरने के बाद साथ ले जाता हूँ।"

जमींदार ने पूछा—"भला कर्ज चुकाना, देना और बाँटना कैसा ?" तोते ने कहा—"वृद्ध माँ-बाप हैं, उन्हें दिखता भी नहीं, सो दो उन्हें देता हूँ। दो बच्चे बहुत छोटे हैं उनके लिए और पड़ोसी बीमार है दो उनके लिए देता हूँ। इसे कर्त्तव्य समझकर आपके चौकीदारों का सामना करने का जोखिम भी उठाता हूँ।"

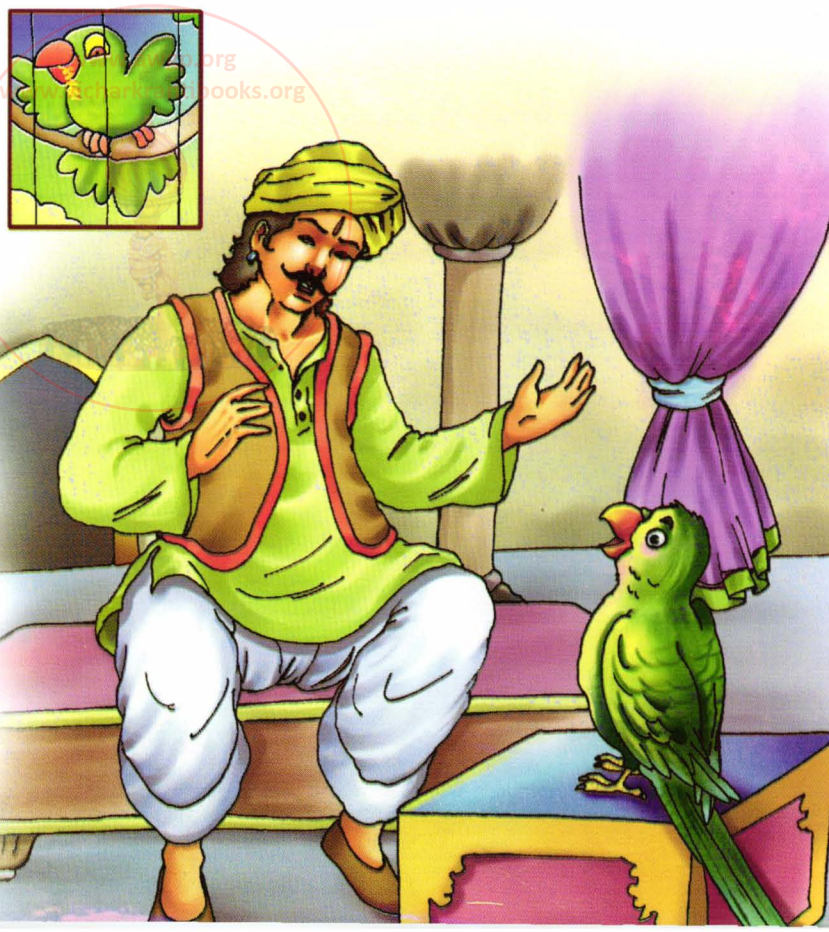

जमींदार ने उस भावनाशील तोते को प्यार किया और प्रसन्नतापूर्वक छोड़ दिया।

अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करने वाला दूसरों से भी सम्मान पाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी किंतु बड़ी बात

बापू का उस दिन मौन व्रत था। वे प्रात:काल आश्रम के बच्चों को साथ लेकर टहलने गए। रास्ते में एक तीन इंच लंबा सुई का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। गांधी जी ने एक छोटी लड़की से उसे उठा लेने का इशारा किया। लड़की ने उठा तो लिया पर उलट-पुलटकर देखने पर उसे बेकार पाया और आगे चलकर फेंक दिया।

शाम को मौन टूटा तो गांधी जी ने लड़की से वह टुकड़ा माँगा। पर वह तो उसे बेकार समझकर फेंक चुकी थी। गांधी जी नाराज हुए और ढूँढ़ लाने के लिए उसे भेजा। टुकड़ा मिल गया और उसे साफ करके गांधी जी ने सूत काता और कहा—"वस्तुओं का पूरा सदुपयोग करने की आदत सभी को डालनी चाहिए। बरबादी तनिक भी न करें।"

यह बात छोटी लगती है। पर यह छोटे-छोटे प्रसंग ही मिलकर संकल्प सुदृढ़ करते हैं और दृढ़ चरित्र का निर्माण करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईमानदारी का फल

एक होटल में किसी मुसाफिर के २००० डालर छूट गए थे। होटल के नौकर ने देख लिए और जहाँ गिरे थे, वहीं घास-पात से ढँक दिए।

मुसाफिर एक सप्ताह बाद लौटा, तो होटल वालों से भी पूछा। उस लड़के ने घास-पात से ढँके पैसे वहाँ दिखा दिए, जहाँ वे गिरे थे। मुसाफिर उसकी ईमानदारी पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसे अपने व्यापार में एक ईमानदार मुनीम की जरूरत थी, सो उसे साथ ले लिया।

वेतन बढ़ते-बढ़ते वह मुनीम भी मालदार हो गया। ईमानदारी अपनाकर, मुसाफिर का मन जीतकर उसने जो लाभ पाया, वह असाधारण था।

यही व्यक्ति आगे चलकर प्रसिद्ध होटल व्यवसायी पी० हिल्टन बना। सच ही है, ईमानदार होने का अर्थ है, हजार मनकों में अलग चमकने वाला हीरा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस्य का अभिशाप

एक बार शैतान को संन्यास लेने की सूझी। उसने अपना सारा सामान लोगों को उपहार में बाँटना शुरू किया।

उसने नशेबाजी, चुगली, ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि सबका दान कर दिया। अब उसके पास सिर्फ आलस्य बच गया। लेकिन उसे किसी को भी देने के लिए वह तैयार न हुआ।

एक वृद्ध ने पूछा—"भाई, जब संन्यास ही ले रहे तो इसे अपने पास क्यों रखते हो?"

शैतान बोला—"कभी संन्यास में मेरा जी न लगा तो इसके सहारे फिर मैं अपनी जिंदगी बिता दूँगा। इसके कारण मैं अपने पहले दी गई वस्तुएँ भी वापस ले लूँगा।"

सचमुच आलस जीवन की सभी बुराइयों की मूल जड़ है। इससे सब बुराइयाँ अपने आप पैदा हो जाती हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह आलस्य न करे। आलसी में बहुत सी बुराइयाँ अपने-आप आ जाती हैं।

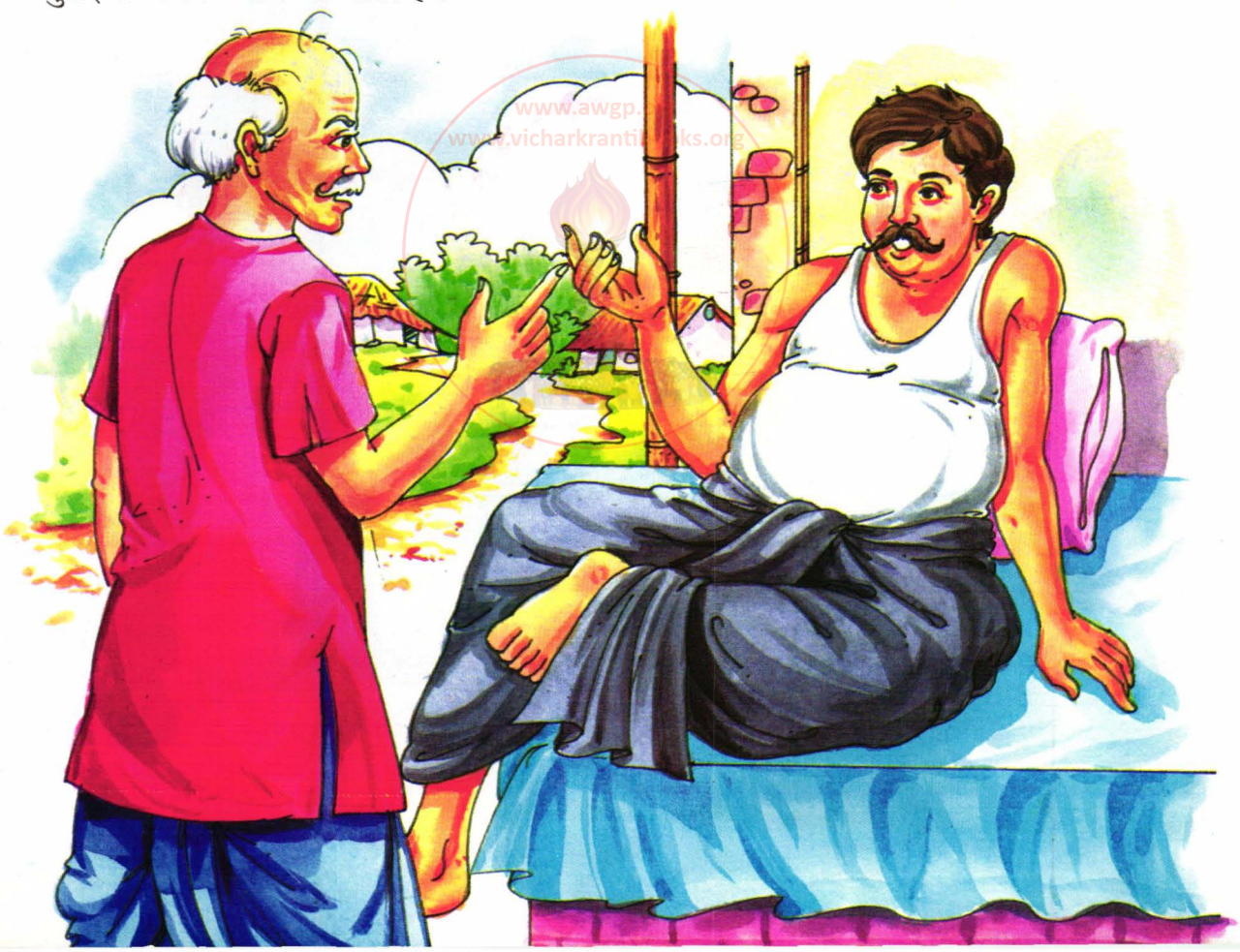

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंदरों ने बगीचा उजाड़ा

वाराणसी के शासक ब्रह्मदत्त के राज्य में का एक अपना सुंदर सा बगीचा था। बगीचे में देश-देशांतर के दुर्लभ एवं सुंदर वृक्षों, लताओं का संग्रह था। बोधिसत्व उसी उद्यान में अपने साथ के सभी लोगों के साथ विश्राम कर रहे थे। उस दिन नगर में एक भव्य उत्सव आयोजित था। माली को उत्सव देखने की लालसा हो आई। उद्यान में बंदरों का समूह था। बंदरों के नायक से माली की मैत्री थी। माली ने नायक बंदर को बुलाकर कहा—"मित्र! एक दिन तुम अपने समूह के साथ मिलकर बगीचे को पानी से सींच दो तो मैं उत्सव देख आऊँ।"

बंदर ने प्रसन्नतापूर्वक मित्र का कार्य संपादित करने का वचन दिया। माली चला गया तो बंदर बरतन से लताओं का सिंचन करने लगे। तभी नायक ने कहा—"मित्रो! हमें विवेकपूर्ण सिंचन करना चाहिए, अन्यथा जल की कमी पड़ जाएगी। अतएव तुम लोग लताओं को उखाड़कर उनकी जड़ों की गहराई देख लो। जो जड़ जितनी गहरी हो, उसके अनुसार ही सिंचाई करो।"

बंदरों ने शीघ्र ही लताएँ उखाड़ डालीं। बोधिसत्व ने आकर बगीचे का विनाश देखा, तो लंबी श्वास खींचकर कहा—"जो काम का जानकार नहीं होता वह काम को बिगाड़ ही देता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूझ-बूझ काम आई

एक बार मालवा क्षेत्र में अकाल पड़ा। पूरे वर्ष पानी नहीं बरसा। इस कारण किसान-मजदूरों के यहाँ अनाज नहीं रहा और न कुएँ-तालाबों में पानी। लोग भूखों मरने लगे। बहुत से व्यक्ति प्रांत छोड़कर सुदूर देशों में मजदूरी करने और पेट पालने चले गए।

इसी क्षेत्र में एक गाँव में एक धनी सेठ थे। उनके यहाँ अन्न के भंडार भरे पड़े थे। उन्होंने लूटे जाने से पूर्व ही समझदारी से काम लिया और अन्न मुफ्त बाँटने की अपेक्षा अपने घर पर पके भोजन का लंगर खोल दिया। शर्त यह लगा दी कि समर्थ लोग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तालाबों और कुओं को गहरा करने के लिए श्रम करेंगे। यह प्रयास कई महीने कई गाँवों में चला। नहर-तालाबों से पानी मिलने लगा और उसी से सींचकर जल्दी पकने वाली फसलें उगाई गईं।

घोर अकाल के बीच भी क्षेत्र के लोगों ने अपने प्राण बचा लिए। जब पानी बरसा और अच्छा समय आया, तो लोगों ने खाया हुआ ब्याज समेत वापस कर दिया। सेठ की समझदारी ने यश भी कमा लिया और घाटा भी न सहा।

हमारे देश में लोक-सम्मान भी ऐसी ही विभूतियों ने पाया, जिन्होंने अपना जीवन औरों के लिए परमार्थ में लगाया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वचन के पक्के रघुपति सिंह

रघुपति सिंह महाराणा प्रताप के कुशल तथा साहसी योद्धाओं में से एक था। अकबर की सेना उससे बहुत घबराती थी। उसे पकड़ने के लिए बड़ा इनाम भी घोषित कर रखा था। एक दिन अचानक उसका लड़का बहुत बीमार हो गया। मरणासन्न बेटे का मुँह देखने के लिए रघुपति सिंह अधीर हो उठा पर सारे गाँव में कड़ा पहरा लगा था। आखिर वे एक पहरेदार के पास जाकर बोले—"आप मुझे बेटे के पास हो आने दीजिए। लौटकर आपके पास आ जाऊँगा, तब कैद कर लेना।" उनकी सत्यता पर सिपाही को विश्वास आ गया और उन्हें अंदर जाने दिया। बेटे का मुँह देखकर रघुपति सिंह सीधे उसी सिपाही के पास गए। उन्हें दरबार में ले जाया गया। अकबर ने सारी घटना सुनी तो पूछा—"आप झूठ बोलकर भाग सकते थे, पर ऐसा क्यों नहीं किया?" रघुपति सिंह ने कहा—"वचन के धनी, सच्चे व्यक्ति कभी किसी के साथ विश्वासघात नहीं करते हैं।"

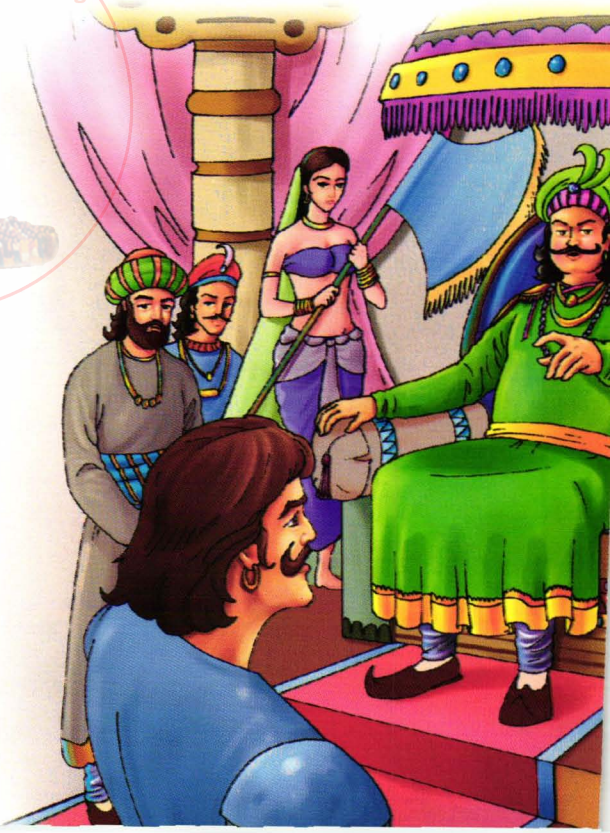

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना

एक सेठ बहुत धनी था। उसके कई लड़के भी थे। परिवार तो बहुत बड़ा हो गया परंतु एकदूसरे से बिलकुल प्यार नहीं था, इस कारण परिवार में, द्वेष एवं कलह रहने लगा। एक रात को लक्ष्मीजी ने सेठ को सपना दिया कि मैं अब तुम्हारे घर से जा रही हूँ। पर चाहो तो चलते समय कोई एक वरदान माँग लो। सेठ ने कहा—"भगवती आप प्रसन्न हैं तो मेरे घर का कलह दूर कर दें, आप भले ही चली जाएँ।"

लक्ष्मीजी ने कहा—"मेरे जाने का कारण ही गृहकलह था। जिन घरों में परस्पर द्वेष रहता है, मैं वहाँ नहीं रहती। अब जबकि तुमने कलह दूर करने का वरदान माँग लिया तो सब लोग शांतिपूर्वक रहोगे, तब तो मुझे भी यहीं ठहरना पड़ेगा। सुमति वाले घरों को छोड़कर मैं कभी बाहर नहीं जाती।" जिनके परिवारों में व्यक्ति आपस में झगड़ा करते हैं मिल-जुलकर नहीं रहते वहाँ गरीबी आ जाती है। अतः प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।

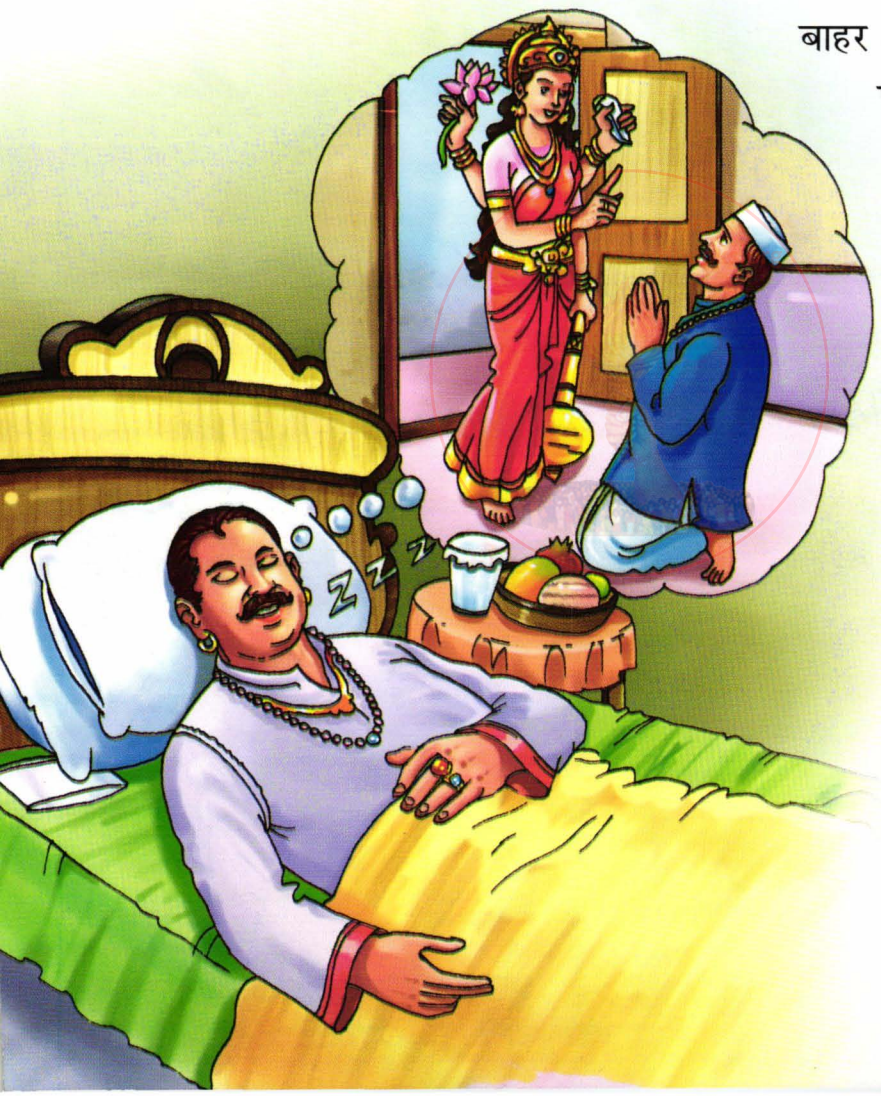

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महात्मा बनने का सूत्र

गांधी जी के आश्रम में सफाई और व्यवस्था के कार्य हर व्यक्ति को अनिवार्य रूप से करने पड़ते थे। एक समाज को समर्पित श्रद्धावान बालक उनके आश्रम में आकर रहा। स्वच्छता-व्यवस्था के काम उसे भी दिए गए। उन्हें वह निष्ठापूर्वक पूरा करता भी रहा। जो बतलाया गया, उसे जीवन का अंग बना लिया।

जब आश्रम निवास की अवधि पूरी हुई, तो गांधी जी से भेंट की और कहा—"बापू! मैं महात्मा बनने के गुण सीखने आया था, पर यहाँ तो सफाई व्यवस्था के सामान्य कार्य ही करने को मिले। महात्मा बनने के सूत्र न तो बतलाए गए, न उनका अभ्यास कराया गया।"

बापू ने सिर पर हाथ फेरा, समझाया, कहा—"बेटे! तुम्हें यहाँ जो संस्कार मिले हैं, वे सब महात्मा बनने की सीढ़ियाँ हैं। जिस तन्मयता से सफाई तथा छोटी-छोटी बातों में व्यवस्था बुद्धि का विकास कराया गया, यही बुद्धि मनुष्य को महामानव बनाती है।"

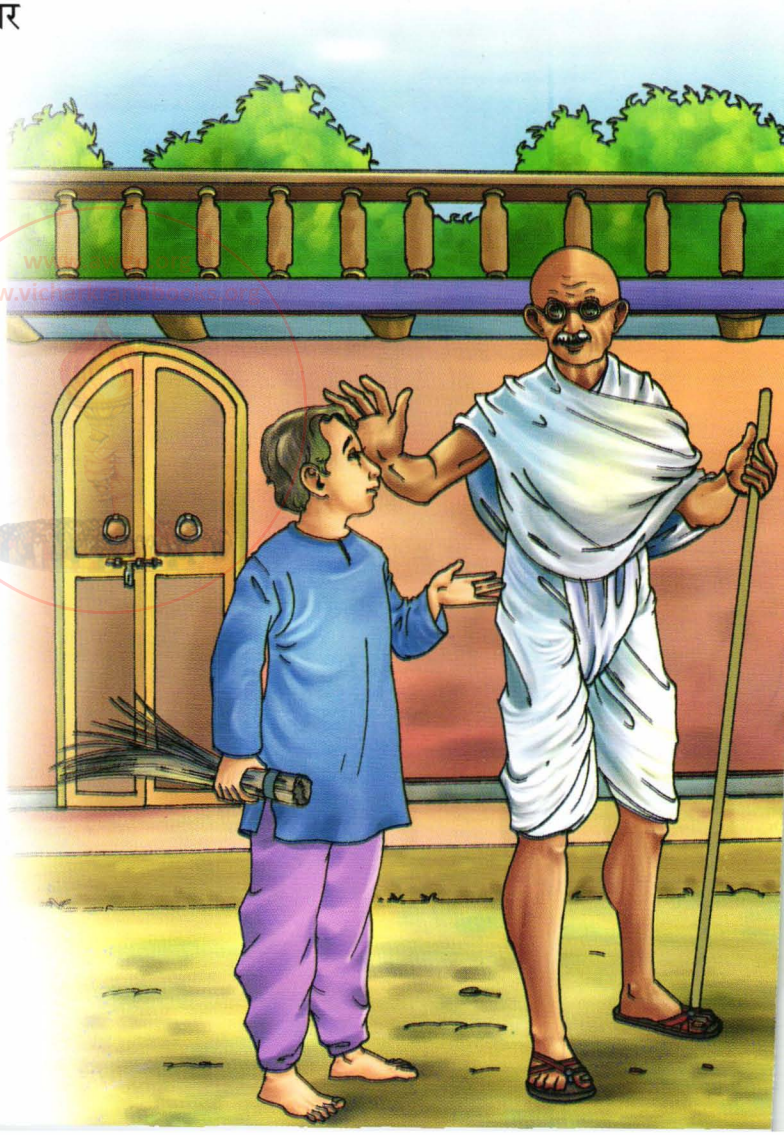

गांधी जी ने इसी प्रकार छोटे-छोटे सद्गुणों के महत्त्व को समझाते हुए अनेक लोकसेवियों के जीवनक्रम को ढाला, उन्हें सच्चे निरहंकारी स्वयंसेवक के रूप में विकसित किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आम, जिसने सड़ना स्वीकार कर लिया

एक आम का बड़ा सा बाग था। एक दिन पेड़ का मालिक पके आमों की खोज-बीन करने वृक्ष पर चढ़ा। एक आम पत्तों की झुरमुट में ऐसा छिपा कि हाथ आया ही नहीं। दूसरे दिन आम ने देखा कि उसके सब पड़ोसी आम जा चुके हैं, उसका अकेले ही रहने का मोह नहीं टूटा था पर अब मित्रों की विरह-व्यथा सताने लगी थी। आम कभी तो सोचता नीचे कूद जाऊँ और अपने मित्रों में जा मिलूँ फिर उसे मोह अपनी ओर खींचता। आम उसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा। संशय का यही कीड़ा धीरे-धीरे फल को खाने लगा और एक दिन उसका सारा रस समाप्त हो गया। मात्र रूखी बोंड़ी नर-कंकाल के समान पेड़ में लगी रही।

जो लोग आगे बढ़ने का प्रयत्न नहीं करते, वे उसी अवस्था में जीवनभर बने रहते हैं। उन्नति के लिए आगे बढ़ना आवश्यक है ।

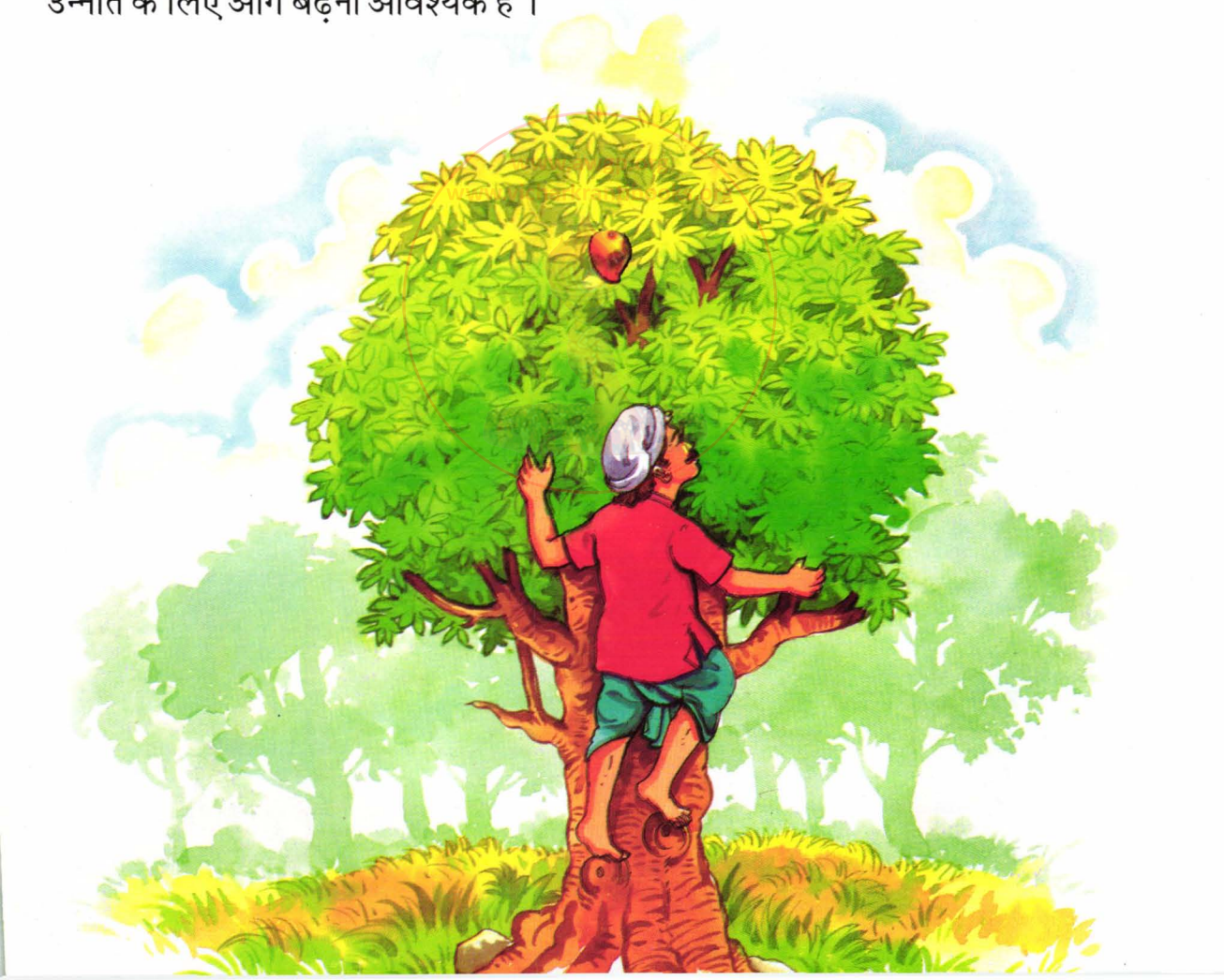

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाड़ा रानी का अपूर्व त्याग

सरदार चूड़ावत का विवाह हुए अभी थोड़े ही दिन हुए थे। पत्नी जैसी रूपवती थी वैसी ही गुणवती भी। उन दिनों औरंगजेब हमारे देश पर बहुत अत्याचार कर रहा था। उसका सामना करने के लिए राजपूतों को युद्ध के लिए आएदिन तैयार रहना पड़ता था। ऐसी ही एक चुनौती फिर सामने आई। चूड़ावत को युद्ध का मोर्चा सँभालने के लिए जाना पड़ा। एक ओर कर्त्तव्य की पुकार थी, तो दूसरी ओर नवविवाहिता पत्नी का आकर्षण। सरदार का मन दोनों ओर डोलने लगा। युद्ध में जाए या नहीं, पत्नी को छोड़े या नहीं। इस तरह दुविधा में पड़े सरदार चूड़ावत कोई निर्णय न कर पाए।

उन्हें चिंतातुर देखकर रानी ने पूछा तो सरदार ने अपने मन का दरद बताया। हाड़ा रानी गंभीर हो गईं। उसने सोचा "यदि मेरे आकर्षण से पति अपने कर्त्तव्य-पथ से विचलित

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होते हैं तो मेरा न रहना ही देश और धर्म के लिए हितकर सिद्ध होगा। मुझे अपना बलिदान करके पति की दुविधा मिटा देनी चाहिए जिससे वे एकाग्रचित अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकें।''

रानी ने बड़े वेग से एक हाथ में तलवार और दूसरे में अपने बाल पकड़कर वार किया। उसका मुंड सरदार की गोद में उछलने लगा। यह सब बिजली की तरह ऐसे हुआ कि सरदार सँभल भी न पाए। पत्नी के बलिदान ने उनकी आँखें खोल दीं। चूड़ावत की दुविधा अब मिट चुकी थी। वे घोड़े पर सवार होकर युद्धक्षेत्र की ओर बढ़े। वे इतनी वीरता से लड़े कि शत्रु का मनोबल टूटने लगा। यह हाड़ा रानी के अपूर्व त्याग का ही परिणाम था।

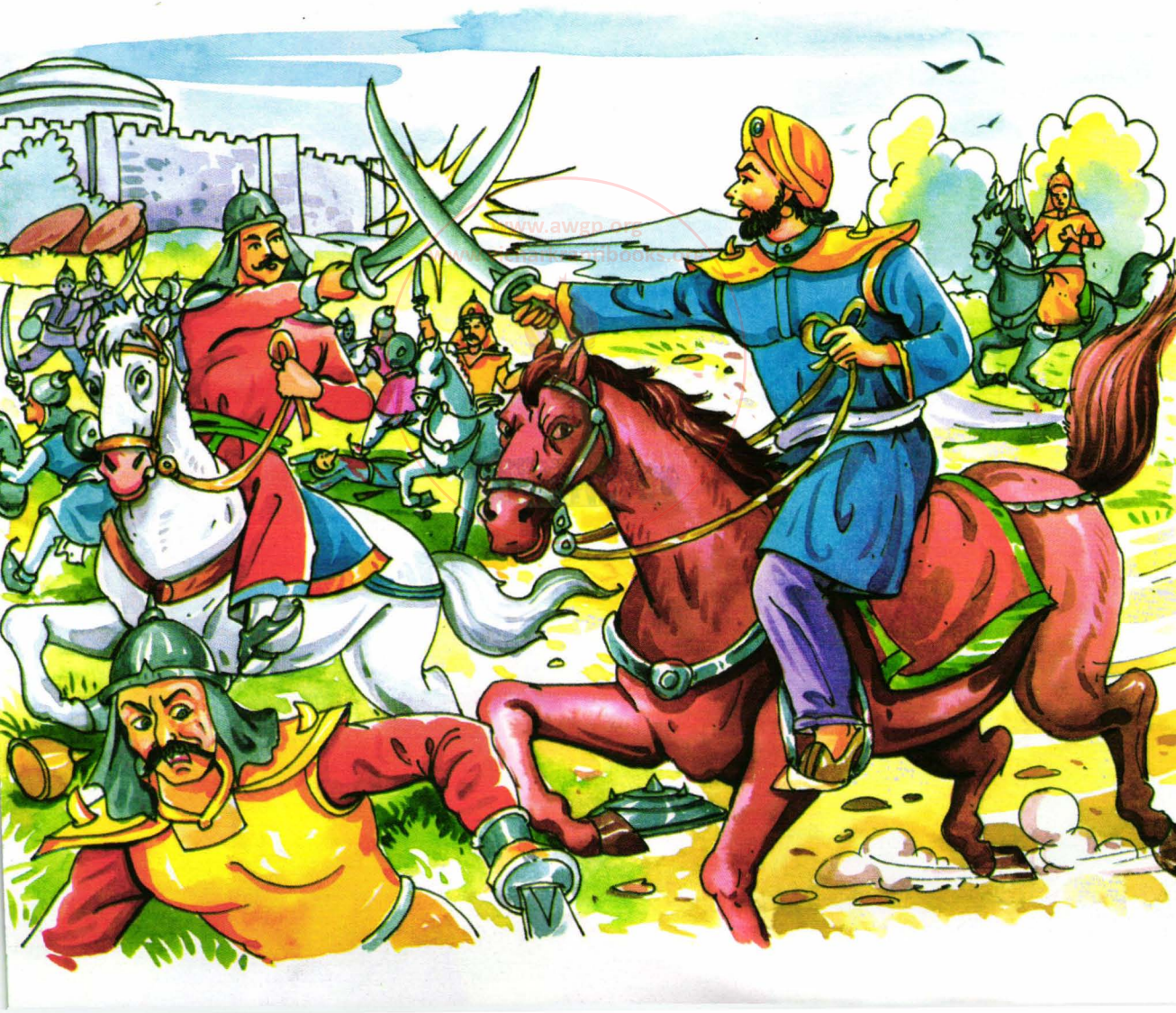

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जगदीशचंद्र वसु

जगदीशचंद्र वसु को एक छोटी सी घटना से प्रेरणा मिली थी। हुआ यह था कि बचपन में वे शाम के समय एक पेड़ पर चढ़कर उछल-कूद मचा रहे थे। माँ ने मना किया था कि शाम के समय पेड़ों को तंग मत करो, उनके सोने का वक्त हो गया है।

माँ की इसी सिखावन ने उन्हें इतना मथ डाला कि वे सोचने लगे, क्या सचमुच पेड़-पौधों में प्राण होते हैं? इस छोटे से प्रश्न का बीज ही आगे चलकर विकसित वनस्पति विज्ञान की नींव रख गया।

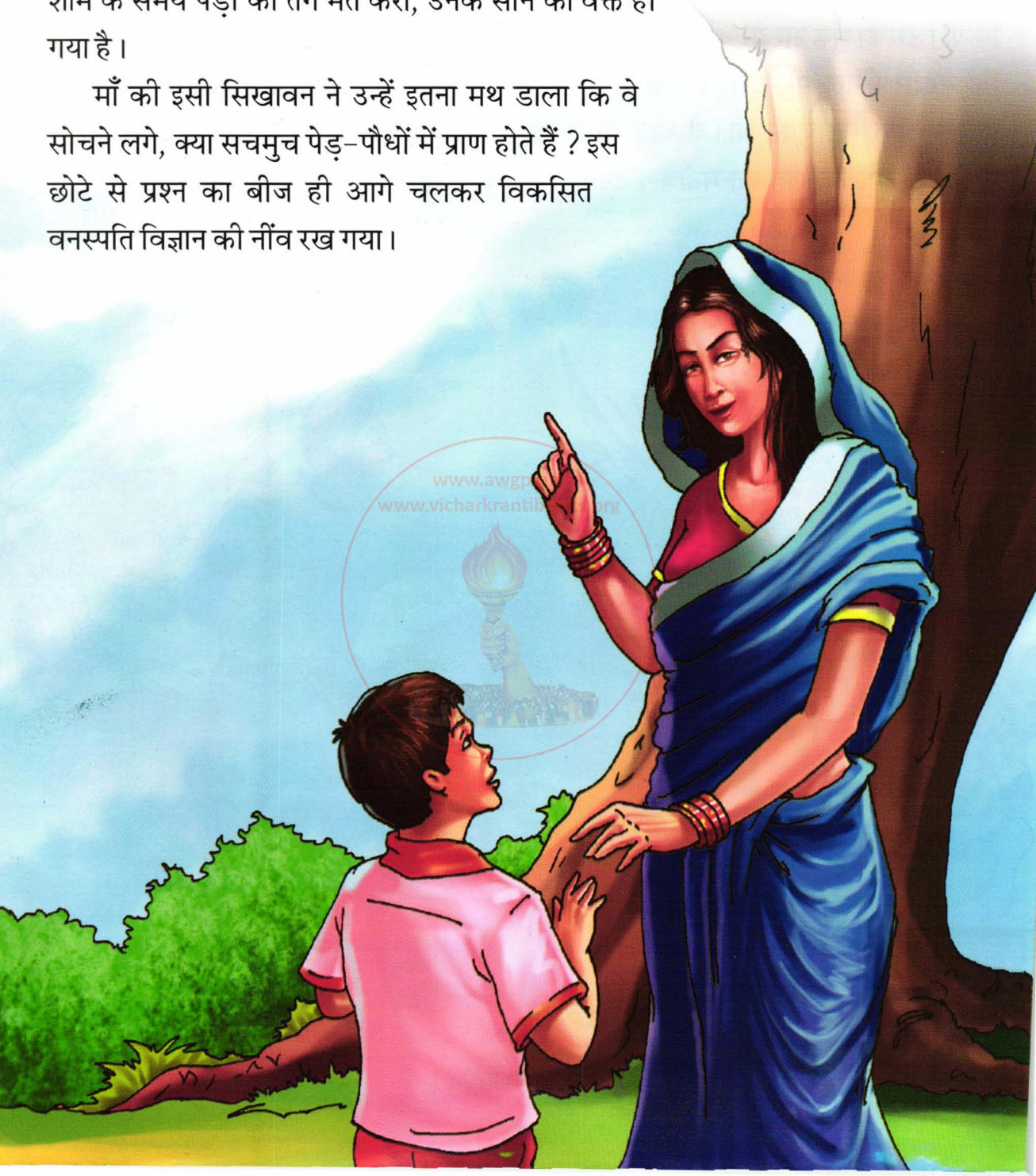

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org